पाठ – 20

हाना

4JR5XH

–लेखक मंडल

छत्तीसगढ़ लोक साहित्य के ढोली–ढाबा आय। साहित्य दू प्रकार के होथे–लिखे साहित्य अउ मुँहअँखरा साहित्य। मुँहअँखरा साहित्य ल लोक–साहित्य कहिथें। लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, जनौला, हाना ये जम्मो लोक–साहित्य आय, जेन ह लोक कंठ म मुँहअँखरा हवय।

हाना ल हिंदी म लोकोक्ति कहिथें। लोकोक्ति के मतलब हे लोक + उक्ति,माने लोक–मानस द्वारा कोनो घटना ल लेके कहे गै बात। इही लोकोक्ति ल छत्तीसगढ़ी म हाना कहिथें। हाना म लोक जीवन के अनुभव समाय रहिथे। हाना ह ज्ञान के भंडार आय। कोनो समस्या ल सुलझाय बर हाना ह बड़ काम के होथे। हमन देखथन के पढ़े – लिखे ले जादा गाँव के रहइया अप्पढ़ मनखे के गोठ–बात म खूबेच प्रभाव होथे, ओकर कारन आय हाना।

हाना ह सिखावन,अचार–बिचार,नीति–नियम के दरपन आय। एकर प्रयोग ले बोलइया के भाषा अउ भाव म चमत्कार के संगे–संग सुग्घर प्रभाव पैदा होथे अउ सुनइया ह घलो जल्दी प्रभावित होथे। कइसनो भी हाना होय,ओ ह कोनो–न–कोनो घटना ले जुड़े रहिथे। जइसे –

मही माँगे ल जाय,ठेकवा लुकाय।

सियान मन बताथें के एक झन माइलोगन ह परोस म मही माँगे ल जावय फेर का करय, बिचारी ह संकोच के मारे ठेकवा ल लुका लय। ये–ला घर के सियनहा ह देख डरिस अउ ओकर मुँह ले निकल परिस–मही माँगे ल जाय, ठेकवा लुकाय। अइसने एक ठन अउ हाना हे–

अध–जल गगरी, छलकत जाय ।

हमन देखथन के जेन गगरी ह आधा भरे रहिथे,ओ ला बोह के रेंगबे त ओ ह बहुतेच छलकथे। ये हमर रोज के अनुभव आय। अइसने देखे जाथे के जेखर ज्ञान ह कम रहिथे ओ ह अब्बड़ बोलथे। जीवन के कतेक सुग्घर अनुभव येमा समाय हे। हाना म ज्ञान के भंडार रहिथे। एला बोलइया अउ सुनइया ह समझ सकत हे।

हाना हमर छत्तीसगढ़ी भाषा के सिंगार आय। जेकर ले भाषा के सुघरइ,मिठास अउ प्रभाव बढ़थे। छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य म कतको हाना मुँहअँखरा बगरे हवय,जेन ल हमन बोल–चाल के भाषा म बउरथन।

छत्तीसगढ़ी हाना के गजब अकन विशेषता हे। जइसे नान्हेपन,लय,तुक के मिलान,सरलता, सहजता अउ मनोरंजन । जइसे –

धीर म खीर ।

साँच ल का आँच ।

उन के दून ।

ये हाना मन भले नान – नान दिखत हवँय, फेर, ईंकर प्रभाव लोक–जीवन म भारी देखउल देथे। कतकोन हाना तो कविता बरोबर लगथें। जइसे –

कलेवा में लाडू, नता में सादू ।
जाँगर चले न जँगरोटा ।
खाय बर गहूँ के रोटा ।।

हाना ह बड़ सहज अउ सरल होथे। येला बोले – गोठियाय म कउनो अड़चन नइ होवय। सरलता ह एकर विशेषता ये।

खाय बर जरी, बताय बर बरी ।
मन म आन, मुँह म आन ।

छत्तीसगढ़ी म हाना ल कोनो–कोनो जघा भाँजरा कहे जाथे। हाना ल कहावत अउ लोकोक्ति घलो कहिथें। कुल मिलाके येला हाना कहव के भाँजरा कहव,येला कहावत कहव के लोकोक्ति,एकेच बात आय।

अर्थ के अधार म हाना ल खाल्हे लिखाय ढंग ले बाँटे जा सकत हे –

1. ठउर संबंधी हाना – हर गाँव,शहर,नगर ठउर के अपन विशेषता होथे। ओकर अलगे चिन्हारी होथे। उहाँ के रहन–सहन के अधार म ओ ठऊर के गुन–अवगुन होथे।उही गुन–अवगुन के अधार म हाना के चलन देखे ल मिलथे । जइसे –

छुईखदान के बस्ती,जय गोपाल के सस्ती ।

छुईखदान के राजा ह बैरागी रहिस अउ वो ह कृष्ण भगवान के भगत रहिस। उहाँ के रहइया मन आज ले आपस म 'जय गोपाल' कहिके जोहारथें। कहे के मतलब, जेन चीज जिंहा जादा होथे ओ ह सस्ती अउ प्रचलित हो जथे।

रात भर गाड़ी जोते,कुकदा के कुकदा ।

अररभाँठा कुकदा गाँव जिहाँ कोनो गाड़ी वाले ह रातकन गाड़ी फाँदिस। गाड़ी ह रात भर भाँठा म घूमत रहिगे। एकर अर्थ हे के बिना सोचे–समझे मिहनत करे ले फल नइ मिलय।

2. खेती संबंधी हाना – छत्तीसगढ़ म 80 प्रतिशत मनखे गाँव म रहिथें। इहाँ के प्रमुख काम खेती आय। छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र आय। एला 'धान के कटोरा' घलो कहे जाथे। छत्तीसगढ़ी हाना म खेती–किसानी के गोठ–बात ह घलो समाय हे। जइसे –

महतारी के परसे अउ मघा के बरसे ।

महतारी के भोजन परसे ले जइसे लइका मन अघाथें,वइसने मघा नक्षत्र के बरसा ले खेत–खार मन अघाथें।

कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे–कोड़े खेती।

मतलब हे,जइसे मूड़ी कोरे बेटी ह सुग्घर दिखथे,वइसने नींदे–कोड़े खेती सुग्घर दिखथे अउ जादा उपज देथे।

3. पशु–पक्षी संबंधी हाना– पशु–पक्षी मन मनखे के संगवारी आय, तेकरे सेती ईंकर गुन अवगुन ह घलो हाना के विषय बन गे हे । जइसे –

दुधियारिन गाय के लात मीठ।

जेकर से हम–ला काम रहिथे ओकर गुस्सा अउ मार ह घलो सुहाथे। एक ठन हाना हे

सींका के टूटती अउ बिलई के झपटती।

मतलब हे संजोग से कोई काम बन जाना।

4. प्रकृति संबंधी हाना – लोक–जीवन प्रकृति ले जुड़े रहिथे अउ प्रकृति ह लोक ले। तेकरे सेती प्रकृति उपर घलो कोरी–कोरी हाना हे। जइसे –

संझा के पानी, बिहनिया के झगरा।

कोनो दिन जब संझा बेरा झड़ी शुरू हो जाथे त रात भर बंद नइ होवय, ठँउका वइसने जेन घर म बिहनिया बेरा झगरा शुरू हो जाथे त थमे ल नइ धरय ।

हपटे बन के पथरा, फोरे घर के सील।

ये हाना के मतलब हे के दूसर के गुस्सा ल दूसर उपर उतारना।

5. अंग संबंधी हाना – मनखे के अंग संबंधी हाना घलो लोक–जीवन म सुने ल मिलथे। जइसे–

मूड़ के राहत ले,माड़ी म पागा नइ बँधाय।

एकर मतलब ये हे के सियान के रहत ले लइका के सियानी नइ चलय।

मूड़ ले बड़े पागा।

एकर मतलब हे कोनो जिनिस के महात्तम ल जरूरत ले जादा बताना।

6. घर–परिवार संबंधी हाना – हाना के विषय विविध हे। जेन म घर–परिवार,नता–रिश्ता के गोठ घलो समाय रथे । जइसे –

हँड़िया के मुँह ल परई म तोपे,
मनखे के मुँह ल कामा ।

एकर सोज–सोज अर्थ हे,हर मनखे बोले बर सुतंत्र हे,निंदा करइया ल कोन रोक सकत हे।

चलनी म दूध दूहय,करम ल दोस देय।

एकर मतलब हे अंते–तंते के काम करना अउ अपन करम ल दोस देना।

7. नीति संबंधी हाना – जिनगी म नीति–नियम के बड़ महात्तम हे,ये नीति–नियम ह लोक–जीवन म देखे बर मिलथे। नीति संबंधी हाना ह जिनगी बर उपदेश के काम करथे। जइसे –

रिस खाय बुध, बुध खाय परान।

माने गुस्सा करे म बुद्धि सिरा जाथे अउ जब बुद्धि सिरा जाथे त मनखे परान ल घलो गँवा डारथे।

बोंय सोन जामय नहीं, मोती लुरे न डार,
गै समय बहुरय नहीं, खोजे मिले न उधार।

ये हाना म कतका सुग्घर नीति के गोठ लुकाय हे। सोन ल बो देबे त वो जामय नहीं,मोती ह कोनो डारा म फरय नहीं। माने, मनखे ल कुछू पाना हे त ओला मेहनत करना जरूरी हे। वइसने जेन समय ह नहक जाथे तेन ह लहुट के नइ आवय। न कोनो मेर खोजे म मिलय,न कहूँ उधार मिलय। कहे के मतलब हे के समय बड़ कीमती हे,हमला समय के बने उपयोग करना चाही। छत्तीसगढ़ी साहित्य म अतकेच नहीं,हाना के अउ कतकोन किसम हे। जइसे जात संबंधी हाना, समाज संबंधी हाना, धन–सिक्का संबंधी हाना, हाँसी–ठिठोली के हाना। एला हम ला अपन भाषा–व्यवहार म बऊरना चाही।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

हाना	=	लोकोक्ति	मुँहअँखरा	=	मौखिक
अप्पढ़	=	अनपढ़	ठेकवा	=	मिट्टी का बर्तन
माइलोगन	=	औरत	सुघ्घर	=	सुंदर
गजब अकन	=	बहुत सारा	कलेवा	=	व्यंजन
जरी	=	एक प्रकार की भाजी , जिसकी जड़ें भी खाई जाती है	आन	=	दूसरा
			ठउर	=	जगह
			मघा	=	एक नक्षत्र
कोरी	=	बीस की संख्या	संझा	=	शाम
माड़ी	=	घुटना	पागा	=	पगड़ी
सोझ	=	सीधा	अंते–अंते	=	इधर–उधर
रिस	=	गुस्सा	लहुटके	=	लौटकर
अतकेच	=	इतना ही	बऊरना	=	प्रयोग करना

अभ्यास

पाठ से

क – साहित्य के प्रकार के होथे ?

ख – हिन्दी म हाना ल का कहिथे ?

ग – हाना के प्रयोग ले भाषा म का–का प्रभाव पैदा होथे ?

घ – 'अधजल गगरी,छलकत जाय' के का अर्थ हे ?

ङ – छत्तीसगढ़ी म हाना ल अउ का नाव ले जाने जाथे ?

च – विषय, भाव अउ –अर्थ के अधार म हाना ल के भाग म बाँटे जा सकत हे?

पाठ से आगे

1. हाना के परयोग वाक्य में नई रहितीस त वाक्य में का कमी लगतीस बिचार कर लिखव।
2. ये पाठ से बाहिर कोनो जगह हाना सुने होहु तेला सकेल के (दस ठन) लिखव।
3. पाठ में दिहे छत्तीसगढ़ी हाना के हिन्दी लोकोक्ति अपन गुरुजी ला पूछ के लिखव।
4. खाल्हे लिखाय हाना के भाव ला लिखव –

   अ – दुधियारिन गाय के लात मीठ।

   ब – कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे कोड़े खेती।

   स – रिस खाय बुध,बुध खाय परान।
5. 'जाँगर चले न जँगरोटा,खाय बर गहूँ के रोटा' हाना ल वाक्य में परयोग करहु तेला बिचार करके लिखव।

4K1125

भाषा से

1. क – ''दुहना'' क्रिया आय। इही ढंग के पाठ म आय तीन ठन क्रिया शब्द ल खोजव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

   ख – खाल्हे लिखाय शब्द मन म 'ना' प्रत्यय जोड़ के नवा शब्द बनावव अउ वाक्य म परयोग करव –

   लहुट, तँउर, बऊर, बहुर ।

2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो ठन हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखव –

   मनखे, अप्पढ़, हाना, गुस्सा।

3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव –

   सियान, संगवारी, नान–नान, बिहनिया।

- हाना के हमर जिनगी म का महत्व हे ?

  ये विषय उपर दस वाक्य म अपन बिचार लिखव ।

योग्यता विस्तार

- ये पाठ म हाना ल जिनगी बर उपयोगी बताय गेहे। एखर ले हमर तन–मन निरमल बने रहिथे अउ चाल–चलन में सुधार घलो आथे। सहीच म हाना ले जीवन ल सुग्घर बनाय जा सकत हे। अपन बातचीत म अपन क्षेत्र म प्रचलित हाना के प्रयोग करव ।

- ये पाठ म आय जम्मो हाना ल याद करव।

टीप :– पाठ म बहुत अकन हिंदी के शब्द ल जइसने के तइसने ले ले गे हे, जइसे – प्रभाव, विशेषता, अनुभव, भाषा आदि। आने पाठ म घलो कतकों, हिंदी अउ आन भाषा के शब्द मिलही। जउन–जउन जघा मानक शब्द मिलही उहाँ ठहर के थोरकीन सोचहू। एकर छत्तीसगढ़ी म कइसन उच्चारण अउ लिपि बनही।

●●●